विविधा-2

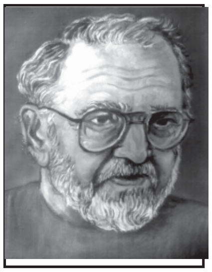

अज्ञेय

कवि परिचय :

हिन्दी साहित्य में `तार सप्तक' के माध्यम से कवियों और कविताओं की विशिष्ट भावधारा को प्रस्तुत कर आलोकित होने वाले कवि अज्ञेय का पूरा नाम सच्चिदानंद हीरानन्द वात्स्यायन `अज्ञेय' है। वे काव्य रचना के साथ-साथ चित्रकला, मूर्तिकला, पुरातत्व और विज्ञान के नव सृजन में पूर्ण मनोयोग से लगे रहे। नवीन मूल्यों की खोज और उनके काव्यमय प्रस्तुतीकरण के लिए वे सदैव प्रयत्नशील रहे हैं। प्रयोगवाद इनकी सूझ की ही उपज है।

विद्यार्थी जीवन से ही अज्ञेय की रुचि काव्य लेखन में रही है। उनकी पहली कविता 1927 में कॉलेज पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। उसके बाद वे अनवरत साहित्य सृजन में संलग्न रहे। `भग्नदूत', चिन्ता, `हरी घास-पर क्षण भर', `बावरा अहेरी', `कितनी नावों में कितनी बार' इनके कविता संग्रह हैं। इनकी प्रारम्भिक रचनाओं में छायावादी वैयक्तिकता, निराशा और वेदना के दर्शन होते हैं। प्रयोगवादी रचनाएँ चिन्ताभावों और सौन्दर्य बोध को नया मोड़ देती हैं, अभिव्यक्ति के नए आयामों और रूपों को स्वर देती है।

अज्ञेय कवि ही नहीं कहानीकार और उपन्यासकार भी हैं। `शेखर एक जीवनी', `नदी के द्वीप', `अपने-अपने अजनबी' इनके उपन्यास हैं। इन्होंने कहानियों के अतिरिक्त निबंध, यात्रा-वृत्त आदि अनेक विधाओं पर लेखनी चलाई है।

अज्ञेय बहुमुखी प्रतिभा के कलाकार हैं। वे दिनमान के कुशल सम्पादक के रूप में जाने जाते हैं। उनकी रचनाशीलता और क्रियाशीलता से सजे व्यक्तित्व और कृतित्व की हिन्दी जगत में विशिष्ट छाप है।

वीरेन्द्र मिश्र

कवि परिचय :

कवि एवं गीतकार वीरेन्द्र मिश्र का जन्म दिसम्बर 1927 को ग्वालियर में हुआ था। उन्होंने जीवन मूल्यों के प्रति पूर्णतः समर्पित होकर जीवन जिया। वे अत्यन्त विनम्र, सरल, स्नेहशील, और कोमल हृदय के साथ ही प्रबल आत्माभिमानी, दृढ़ निश्चयी और संघर्षशील साहित्यकार थे। अपने समय में मिश्र जी कवि सम्मेलनों के लिए अपरिहार्य बन गए थे। जून 1975 ई. में वीरेन्द्र मिश्र ने सांसारिक बन्धनों को तोड़ दिया और पंचतत्व में विलीन हो गए।

मिश्र जी की प्रमुख रचनाओं में `गीतम', `मधुवंती', `गीत पंचम', `उत्सव गीतों की लाश पर', `वाणी के कर्णधार', `धरती' `गीताम्बरा', `शांति गन्धर्व' आदि प्रमुख हैं। उन्होंने गीत, नवगीत, राष्ट्रीय गीत, मुक्तक के अलावा रेडियो नाटक, एवं बाल-साहित्य की भी रचना की।

मिश्र जी समाज और साहित्य में व्याप्त रूढ़ि, विषमता और अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करते रहे। मिश्र जी छायावादोत्तर उन गीतकारों में से हैं जिन्होंने अपने गीतों में अपने समय और समाज की प्रगतिशील आकांक्षाओं को अभिव्यक्त किया है। उनके गीतों में राष्ट्रीय गौरव के साथ-साथ साम्राज्यवाद, पूँजीवाद के घृणित स्वरूप का चित्रण तथा अन्याय, शोषण और विषमता के विरुद्ध एक सच्ची मानवीय चिन्ता के दर्शन होते हैं। इनके गीतों में शक्ति और दृढ़ता, आस्था और विश्वास की प्रतिध्वनियाँ लगातार मिलती हैं। उनके भाव भरे गीतों में जहाँ एक भावुक प्रेमी कवि के प्रणय की अनुगूँज है, वहीं व्यथा एवं पीड़ा के मार्मिक स्वर भी हैं।

वीरेन्द्र मिश्र के गीतों की भाषा सहज, व्यावहारिक तथा लोक प्रचलित शब्दों से युक्त है। उनके गीतों में कसावट और संगीतात्मकता है। अपनी इन्ही विशेषताओं के कारण वीरेन्द्र मिश्र का हिन्दी साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है। 1959 में नवगीत के रूप में कविता की भी वापसी हुई। वीरेन्द्र मिश्र इस नवगीत परम्परा के विशिष्ट कवि माने जाते हैं।

केन्द्रीय भाव :

अज्ञेय आधुनिक कविता में युग-प्रवर्त्तक कवि माने जाते हैं। इनका काव्य प्रेम, प्रकृति, समाज आदि के सन्दर्भों को व्यक्त करता है। इनकी शैली ही इनकी पहचान है। अपनी प्रारंभिक कविताओं में वे प्रकृति के अत्यन्त नजदीक हैं; जबकि अपने उत्तरवर्ती काव्य में वे व्यक्तिवादी प्रवृति के स्थापक बनते हैं। प्रस्तुत नई कविता में वे व्यक्ति के महत्व को स्वीकार करते हैं; वे कहते हैं कि समाज एक नदी है और व्यक्ति इस नदी में द्वीप जैसा है। यद्यपि समाज ही व्यक्ति का निर्माण करता है; किन्तु समाज में व्यक्ति पूरी तरह से अपनी पहचान समर्पित नहीं कर सकता। व्यक्तित्व की अपनी छवि होती है; इस छबि को बनाए रखना भी जरूरी है; किन्तु ऐसा भी न हो कि व्यक्ति अपने व्यक्तित्व की रक्षा में इतना संलग्न हो जाए कि वह समाज की उपेक्षा करने लगे। उसे समाज के विकास और उसके प्रवाह को भी सुरक्षित रखना है।

वीरेन्द्र मिश्र छायावादोत्तर नव गीतकारों में अपना विशेष महत्त्व रखते हैं। उनके गीतों में प्रेम, प्रकृति और समाज के चित्रण के साथ-साथ राष्ट्रीय-भावना भी विद्यमान है। प्रस्तुत गीत में उन्होंने भारतमाता के वैभव का बड़ा ही सुन्दर वर्णन किया है। भारत की सांस्कृतिक-चेतना, उसकी प्राकृतिक सुषमा का गीतात्मक विकास करते हुए गीतकार ने भारतमाता को निरन्तर विजयिनी बनाने का उद्घोष किया है।

नदी के द्वीप

हम नदी के द्वीप हैं।
हम नहीं कहते कि हम को छोड़कर स्रोतस्विनी बह जाय।
वह हमें आकार देती है।
हमारे कोण, गलियाँ, अन्तरीप, उभार, सैकत-कूल,
सब गोलाइयाँ उसकी गढ़ी हैं।

माँ है वह। है, इसी से हम बने हैं।

किन्तु हम हैं द्वीप, हम धारा नहीं हैं,
स्थिर समर्पण है हमारा, हम सदा से द्वीप हैं स्रोतस्विनी के
किन्तु हम बहते नहीं हैं, क्योंकि बहना रेत होना है।

हम बहेंगे तो रहेंगे ही नहीं।
पैर उखड़ेंगे, प्लवन होगा, ढहेंगे, सहेंगे, बह जायेंगे।

और फिर हम चूर्ण होकर भी कभी क्या धारा बन सकते?
रेत बन कर हम सलिल को तनिक गँदला ही करेंगे-
अनुपयोगी ही बनायेंगे।

द्वीप हैं हम। यह नहीं है शाप। यह अपनी नियति है।
हम नदी के पुत्र हैं। बैठे नदी की क्रोड़ में।
वह बृहद भूखंड से हम को मिलाती है।
और वह भूखंड अपना पितर है।

नदी, तुम बहती चलो।
भूखंड से जो दाय हमको मिला है, मिलता रहा है,
माँजती, संस्कार देती चलो। यदि ऐसा कभी हो–
तुम्हारे आह्लाद से या दूसरों के किसी स्वैराचार से, अतिचार से,
तुम बढ़ो, प्लावन तुम्हारा घरघराता उठे–
यह स्रोतस्विनी ही कर्मनाशा कीर्तिनाशा घोर काल प्रवाहिनी बन जाय–
तो हमें स्वीकार है वह भी। उसी में रेत होकर
फिर छनेंगे हम। जमेंगे हम। कहीं फिर पैर टेकेंगे।
कहीं फिर भी खड़ा होगा नये व्यक्तित्व का आकार।
मात; उसे फिर संस्कार तुम देना।

– अज्ञेय

भारत माता की जय बोल दो

साँझ-सकारे चंदा-सूरज करते जिसकी आरती
उस मिट्टी में मन का सोना डाल दो
ग्रह-नक्षत्रों! भारत की जय बोल दो।
वह माली है, वह खुशबू है, हम चमन,
वह मूरत है, वह मंदिर है, हम नमन,
छाया है माथे पर आशीर्वाद-सा,
वह संस्कृतियों के मीठे संवाद-सा
उसकी देहरी पर अपना माथा टेककर,
हम उन्नत होते हैं उसको देखकर,
ऋतुओ! उसको नित नूतन परिधान दो,
झुलस रही है धरती, सावन-दान दो,
सरल नहीं परिवर्तन में मन ढालना,
हर पर्वत से भागीरथी निकालना,

जिस मंदिर-मस्जिद-गिरजे में कैद पड़ा इंसान हो,
आओ, उसमें किरन! किवाड़ा खोल दो,
कुंकुम-पत्रों! भारत की जय बोल दो
उसको करो प्रणाम, दृगों में नीर है,
झेलम की आँखोंवाला कश्मीर है,
बजरे और शिकारे उसकी झील के,
लगते बनजारे तारे कंदील-से,

किसी नारियल-वन की गेय सुगंध से,
अंतरीप के दूरागत मकरंद से,
फूटा करता नए गीत का अंतरा,
कुछ क्षण को दुख भूल, विहँसती है धरा,
दो छवि-कालों के अंतर-आवास में,
कोई बादल घुमड़ रहा आकाश में,

सर्जन की मंगल-बेला में धूमकेतु क्या चाहता
बच्चों की पावन उत्सुकता तौल दो,
देशज मित्रों! भारत की जय बोल दो।
हम अनेकता में भी तो हैं एक ही
हर झगड़े में जीता सदा विवेक ही,
कृति, आकृति, संस्कृति भाषा के वास्ते,
बने हुए हैं मिलते-जुलते रास्ते,
आस्थाओं की टकराहट से लाभ क्या ?
मंजिल को हम देंगे भला जवाब क्या ?
हम टूटे तो टूटेगा यह देश भी,
मैला वैचारिक परिवेश भी,
सर्जन-रत हो आजादी के दिन जियो,
श्रमकर्ताओ, रचनाकारों, साथियों।

शांति और संस्कृति की जो बहती-स्वाधीन जाह्नवी
कोई रोके, बलिदानी रंग घोल दो,
रक्त चरित्रों! भारत की जय बोल दो।

- वीरेन्द्र मिश्र

अभ्यास

अति लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. कवि ने द्वीप को किसका पुत्र कहा है ?
2. नदी सदा गतिशील रहकर क्या दान देती है ?
3. साँझ सकारे भारत माता की आरती कौन करता है ?
4. कवि ने भारत माता की जय-जयकार का आह्वान किससे किया है?
5. झुलसती धरा के लिए किस दान की आवश्यकता है ?

लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. नदी द्वीप को किस प्रकार आकार देती है ?

2. 'भारत माता की जय बोल' कविता में किन-किन प्राकृतिक उपादानों का उल्लेख किया है ?

3. कवि ने प्रकृति से भारत को सजाने-सँवारने का अनुरोध क्यों किया है ?

4. कवि मिश्र ने देशवासियों के मिलजुलकर रहने पर अत्यधिक बल क्यों दिया है ?

5. बलिदानी रंग से कवि का क्या तात्पर्य है ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न -

1. द्वीप की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

2. नदी हमें किस प्रकार संस्कार देती है ? स्पष्ट कीजिए।

3. 'नदी के द्वीप' कविता का मूल भाव अपने शब्दों में लिखिए।

4. कवि मिश्र ने प्रकृति के उपादानों से भारत माता के लिए क्या-क्या करने को कहा है ?

5. **वह माली है, वह खुशबू है, हम चमन,**
   वह मूरत है, वह मंदिर है, हम नमन।

   इन पंक्तियों में माली, खुशबू, मूरत और मन्दिर किसे कहा गया है और क्यों ?

6. कवि ने भारतीयों को 'रक्त चरित्रों' कहकर क्यों सम्बोधित किया है ?

7. मंदिर, मस्जिद और गिरजाघर में मानव कैसे कैद हो सकता है ? इनमें कैद मानव को मुक्त कैसे किया जा सकता है ?

काव्य सौन्दर्य

1. अलंकार छाँटिए -

   क **छाया है माथे पर आशीर्वाद-सा,**
   वह संस्कृतियों के मीठे संवाद-सा।

   ख. **स्थिर समर्पण है हमारा,**
   हम सदा से द्वीप हैं स्त्रोतस्विनी के।

पढ़िए और समझिए -

- **हम नदी के द्वीप हैं।**
  हम नहीं कहते कि हमको छोड़कर स्त्रोतस्विनी बह जाए,
  वह हमें आकार देती है।

- **उसकी देहरी पर अपना माथा टेककर,**
  हम उन्नत होते हैं उसको देखकर,
  ऋतुओं ! उसको नित नूतन परिधान दो,
  झुलस रही है धरती, सावन दान दो।

ऊपर लिखे पद्यांशों में पहला गद्यात्मक है। उसमें संगीतात्मकता का अभाव है। इस प्रकार के पद्यांश अतुकान्त अथवा मुक्त छन्द कहलाते हैं।

दूसरा पद्यांश लययुक्त है; उसमें संगीतात्मकता है अत: वह गेय पद है।

2. नवगीत और अतुकांत पदों में क्या अन्तर है ?

3. निम्नलिखित सामासिक पदों का विग्रह कर समास का नाम लिखिए -

चंदा-सूरज, भूखंड, कर्मनाशा, नारियलवन

4. निम्नांकित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए -

धरती, सुगंध, नदी, पुत्र, पैर।

इन पंक्तियों को ध्यान से पढ़िए -

अति रिस बोले बचन कठोरा।
कहु जड़ जनक धनुष केहि तोरा॥
बेगि देखाव मूढ़ नतु आजू।
उलटौ महि जहँ लगि तव राजू॥

उपर्युक्त पंक्तियों को पढ़ने से हमें क्रोध के भाव की अनुभूति होती है, ऐसी पंक्तियाँ जिन्हें पढ़ने या सुनने से आप में क्रोध या रौद्र का भाव जागे वहाँ रौद्र रस होता है। जब काव्य में क्रोध भाव का वर्णन हो तब रौद्र रस की निष्पत्ति होती है। रौद्र रस का स्थायी भाव 'क्रोध' है।

और समझिए -

उदाहरण - सिर पर बैठ्यो काग, आँख दोउ खात निकारत।
खींचत जीभहि स्यार अतिहि, आनन्द उर धारत॥

काव्य में जब घृणा उत्पन्न करने वाले दृश्य हों तब **वीभत्स** रस की निष्पति होती है। वीभत्स रस का स्थायी भाव 'घृणा' है।

योग्यता विस्तार

1. 'अनेकता में एकता, हिन्द की विशेषता' इस विषय पर कक्षा में भाषण प्रतियोगिता आयोजित कीजिए और इसमें उत्साह से भाग लीजिए।
2. स्वतंत्र भारत में हम देश के विकास के लिए क्या कार्य कर रहे हैं ? एक फाइल में जानकारी लिखकर सम्बन्धित चित्र भी लगाइए।
3. नदियों की महिमा को जानिए और अपने क्षेत्र के जल संरक्षण हेतु कुछ कार्य करने का संकल्प लीजिए।

शब्दार्थ

नदी के द्वीप :

स्रोतस्विनी = नदी, *अंतरीप* = द्वीपों के मध्य की उठान, *क्रोड़* = गोद, *स्वैराचार* = स्वेच्छाचार, *अतिचार* = अत्याचार, अन्याय।

भारतमाता की जय बोल दो :

भागीरथी = गंगा, *कंदील* = लालटेन, चिमनी, *मकरंद* = पराग, *अंतरा* = विराम, *जाह्नवी* = गंगा।

❋ ❋ ❋